सदा एकरस उड़ने और उड़ाने के गीत गाओ

आज अमृतवेले से दिलाराम बाप हर एक दिलरूबा बच्चों के दिल का गीत सुन रहे थे। गीत सब गाते हैं और गीत का बोल भी सभी का एक ही है। वह है ''बाबा''। सभी बाबा बाबा के गीत गाते हैं। सभी को यह गीत आता है, दिन-रात गाते रहते हो? लेकिन बोल एक होते हुए भी हर एक के बोलने का तर्ज और साज़ भिन्न-भिन्न है। किसी की खुशी की साज़ है। किसका उड़ने और उड़ाने का साज़ है और किस-किस बच्चे का अभ्यास का साज़ है। कभी बहुत अच्छा और कभी सम्पूर्ण अभ्यास न होने कारण नीचे ऊपर भी गाते हैं। एक साज़ में दूसरे साज़ मिक्स हो जाते हैं। जैसे यहाँ गीत के साथ जब साज़ सुनते हो तो कोई गीत वा साज़ नाचने वाला होता, कोई स्नेह में समाने वाला होता, कोई पुकार का होता, कोई प्राप्ति का होता। बापदादा के पास भी भिन्न-भिन्न प्रकार के राज़ और साज़ भरे गीत सुनाई देते हैं। कोई आज के विज्ञान की इन्वेन्शन प्रमाण आटोमेटिक निरन्तर गीत गाते। स्मृति का स्विच सदा खुला हुआ है इसलिए स्वत: ही और सदा बजता रहता है। कोई जब स्विच आन करते हैं तब साज़ बजता है। गाते सभी दिल से हैं लेकिन कोई का सदा स्वत: और एकरस है, कोई का बजाने से बजता है। लेकिन भिन्न-भिन्न साज़ कब कैसा, कब कैसा। बापदादा बच्चों के गीत सुन हर्षित भी होते हैं कि सभी के दिल में एक ही बाप समाया हुआ है। लगन भी एक के साथ है। सब कुछ करते भी एक बाप के प्रति हैं। सर्व सम्बन्ध भी एक बाप से जुट गये हैं। स्मृति में, दृष्टि में, मुख पर एक ही बाप है। बाप को अपना संसार बना दिया। हर कदम में बाप की याद से पदमों की कमाई जमा भी कर रहे हैं।

हरेक बच्चे के मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य का सितारा भी चमक रहा है। ऐसी श्रेष्ठ विशेष आत्मायें विश्व के आगे एक्जैम्पल भी बन गई हैं। ताज, तिलक, तख्तनशीन भी हो गये हैं। ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें जिनके गुणों के गीत स्वयं बाप गाते हैं। बाप हरेक बच्चे के नाम की माला सिमरण करते हैं। ऐसा श्रेष्ठ भाग्य सभी को प्राप्त है ना! फिर गीत गाते-गाते साज़ क्यों बदलते हैं? कब प्राप्ति के, कब मेहनत के, कब पुकार के, कब दिलशिकस्त के। यह साज़ क्यों बदलते हैं? सदा एकरस उड़ने और उड़ाने के गीत क्यों गाते? ऐसे गीत गाओ जो सुनने वालों को पंख लग जाएं और उड़ने लग जाएं। लंगड़े को टाँगे मिल जाएं और नाचने लग जाएं। दु:ख की शैय्या से उठ सुख के गीत गाने लगे। चिन्ता की चिता पर बैठे हुए प्राणी चिता से उठ खुशी में नाचने लगें। दिलशिकस्त आत्मायें उमंग-उत्साह के गीत गाने लग जाएं। भिखारी आत्मायें सर्व खजानों से सम्पन्न बन ''मिल गया, पा लिया'' यह गीत गाने लग जायें। यही सिद्धि प्राप्त सेवा की विश्व को आवश्यकता है। अल्पकाल की सिद्धि वालों के पीछे कितने भटक रहे हैं। कितना अपना समय और धन लगा रहे हैं।

वर्तमान समय सर्व आत्मायें मेहनत से थक गई हैं, सिद्धि चाहती हैं। अल्पकाल की सिद्धि द्वारा सन्तुष्ट हो जाती हैं। लेकिन एक बात में सन्तुष्ट होती तो और अनेक बातें उत्पन्न होती। लंगड़ा चल पड़ता लेकिन और इच्छा उत्पन्न होती। यह भी हो जाए, यह भी हो जाए। तो वर्तमान समय के प्रमाण आप आत्माओं के सेवा की विधि ये सिद्धि स्वरूप की होनी है। अविनाशी, अलौकिक रूहानी सिद्धि वा रूहानी चमत्कार दिखाओ। यह चमत्कार कम है क्या? सारी दुनिया की 99 प्रतिशत आत्मायें चिन्ता की चिता पर मरी पड़ी हैं। ऐसे मरे हुए को जिन्दा करो। नया जीवन दो। एक प्राप्ति की टाँग है और अनेक प्राप्तियों से लंगड़े हैं। ऐसी आत्माओं को अविनाशी सर्व प्राप्तियों की टांग दो। अन्धों को त्रिनेत्री बनाओ। तीसरा नेत्र दो। अपने जीवन के श्रेष्ठ वर्तमान और भविष्य देखने की ऑख दो। क्या यह सिद्धि नहीं कर सकते हो! यह रूहानी चमत्कार नहीं दिखा सकते हो! भिखारी को बादशाह नहीं बना सकते हो! ऐसी सिद्धि स्वरूप सेवा की शक्तियाँ बाप द्वारा प्राप्त नहीं हैं क्या! अब विधि स्वरूप से सिद्धि स्वरूप बनो। सिद्धि स्वरूप सेवा के निमित्त बनो। विधि अर्थात् पुरुषार्थ के समय पर पुरुषार्थ किया। अब पुरुषार्थ का फल सिद्धि स्वरूप बन सिद्धि स्वरूप सेवा में विश्व के आगे प्रत्यक्ष बनो। अब यह आवाज बुलन्द हो कि विश्व में अविनाशी सिद्धि देने वाले, सिर्फ दिखाने वाले नहीं, देने वाले सिद्धि स्वरूप बनाने वाले एक ही, यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय ही है। एक ही स्थान है। स्वयं तो सिद्धि स्वरूप बने हो ना!

बाम्बे में पहले यह नाम बाला करो। बार-बार मेहनत से छूटो। आज इस बात पर पुरुषार्थ की मेहनत की, आज इस बात पर मेहनत की। यह है पुरुषार्थ की मेहनत। इस मेहनत से छूट प्राप्ति स्वरूप शक्तिशाली बनना, यह है सिद्धि स्वरूप। अब सिद्धि स्वरूप ज्ञानी तू आत्मायें, योगी तू आत्मायें बनो और बनाओ। क्या अन्त तक मेहनत ही करते रहेंगे? भविष्य में प्रालब्ध पायेंगे? पुरुषार्थ का प्रत्यक्ष फल अब खाना ही है। अभी प्रत्यक्ष फल खाओ। फिर भविष्य फल खाना। भविष्य की

इन्तजार में प्रत्यक्ष फल गँवा नहीं देना। अन्त में फल मिलेगा इस दिलासे पर भी नहीं रहना। एक करो, पदम पाओ। यह अब की बात है। कब की बात नहीं। समझा – बाम्बे वाले क्या बनेंगे? दिलासा वाले तो नहीं बनेंगे ना। सिद्ध बाबा मशहूर होते हैं। कहते हैं ना यह सिद्ध बाबा हैं, सिद्ध योगी हैं। बाम्बे वाले भी सिद्ध सहज योगी अर्थात् सिद्धि को प्राप्त किये हुए हो ना! अच्छा–

सदा स्वत: एकरस उड़ाने के गीत गाने वाले, सदा सिद्धि स्वरूप बन अविनाशी रूहानी सिद्धि प्राप्त कराने वाले, रूहानी चमत्कार दिखाने वाले चमत्कारी आत्मायें, सदा सर्व प्राप्तियों की सिद्धि का अनुभव कराने वाले सिद्धि स्वरूप सहजयोगी, ज्ञान स्वरूप बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

कुमारियों के अलग-अलग ग्रुप से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

1. सदा रूहानी याद में रहने वाली रूहानी कुमारियाँ हो ना! देह-अभिमान वाली कुमारियाँ तो बहुत हैं लेकिन आप रूहानी कुमारियाँ हो। सदा रूह अर्थात् आत्मा की स्मृति में रहने वाली। आत्मा बन आत्मा को देखने वाली इसको कहते हैं रूहानी कुमारियाँ। तो कौन-सी कुमारियाँ हो? कभी देह-अभिमान में आने वाली नहीं। देह-अभिमान में आना अर्थात् माया की तरफ गिरना और रूहानी स्मृति में रहना अर्थात् बाप के समीप आना। गिरने वाले नहीं, बाप के साथ रहने वाले। बाप के साथ कौन रहेंगे? रूहानी कुमारियाँ ही बाप के साथ रह सकती। जैसे बाप सुप्रीम है, कब देह-अभिमान में नहीं आता, ऐसे देह-अभिमान में आने वाले नहीं। जिनका बाप से प्यार है, वह रोज़ प्यार से याद करते हैं, प्यार से ज्ञान की पढ़ाई पढ़ते हैं। जो प्यार से कार्य किया जाता है उसमें सफलता होती है। कहने से करते तो थोड़ा समय सफलता होती। प्यार से अपने मन से चलने वाले सदा चलते। जब एक बार अनुभव कर लिया कि बाप क्या और माया क्या! तो एक बार के अनुभवी कभी भी धोखे में नही आ सकते। माया भिन्न-भिन्न रूप में आती है। कपड़ों के रूप में आयेगी, माँ-बाप के मोह के रूप में आयेगी, सिनेमा के रूप में आयेगी। घूमने-फिरने के रूप में आयेगी। माया कहेगी यह कुमारियाँ हमारी बनें, बाप कहेंगे हमारी बनें। तो क्या करेंगी?

माया को भगाने में होशियार हो? घबराने वाली कमजोर तो नहीं हो? ऐसे तो नहीं सहेलियों के संग में सिनेमा में चली जाओगी। संग के रंग में कभी नहीं आना। सदा बहादुर, सदा अमर, सदा अविनाशी रहना। सदा अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाना। गटर में नहीं गिरना। गटर शब्द ही कैसा है। बाप सागर है, सागर में सदा लहराते रहना। कुमारी जीवन में ज्ञान मिल गया, रास्ता मिल गया, मंजिल मिल गई, यह देख खुशी होती है! बहुत भाग्यवान हो। आज के संसार की हालत देखो। दु:ख दर्द के बिना और कोई बात नहीं। गटर में गिरते हुए चोट के ऊपर चोट खाते रहते। आज का यह संसार है। सुनते हो ना – आज शादी की, कल जल मरी। आज शादी की कल घर आ गई। एक तो गटर में गिरी फिर और चोट पर चोट खाई। तो ऐसी चोट खानी है क्या? इसलिए सदा अपने को भाग्यवान आत्मा समझो। जो बाप ने बचा लिया। बच गये, बाप के बन गये, ऐसी खुशी होती है ना! बापदादा को भी खुशी होती है क्योंकि गिरने से ठोकर खाने से बच गई। तो सदा ऐसे अविनाशी रहना।

2. सभी श्रेष्ठ कुमारियाँ हो ना? साधारण कुमारी से श्रेष्ठ कुमारी हो गई। श्रेष्ठ कुमारी सदा श्रेष्ठ कर्तव्य करने के निमित्त। ऐसे सदा अपने को अनुभव करती हो कि हम श्रेष्ठ कार्य के निमित्त हैं! श्रेष्ठ कार्य क्या है? विश्व कल्याण। तो विश्व कल्याण करने वाली विश्व कल्याणकारी कुमारियाँ हो। घर में रहने वाली कुमारियाँ नहीं। टोकरी उठाने वाली कुमारियाँ नहीं लेकिन विश्व कल्याणकारी कुमारियाँ। कुमारियाँ वह जो कहते हैं कुल का कल्याण करें। सारा विश्व आपका कुल है। बेहद का कुल हो गया। साधारण कुमारियाँ अपने हद के कुल का कल्याण करती हैं। और श्रेष्ठ कुमारियाँ विश्व के कुल का कल्याण करेंगी। ऐसी हो ना! कमजोर तो नहीं! डरने वाली तो नहीं! सदा बाप साथ है। जब बाप साथ है तो कोई डर की बात नहीं। अच्छा है, कुमारी जीवन में बच गई यह बहुत बड़ा भाग्य है। उल्टे रास्ते पर जाकर फिर लौटना, यह भी समय वेस्ट हुआ ना! तो समय, शक्तियाँ सब बच गई। भटकने की मेहनत से छूट गई। कितना फायदा हुआ। बस वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य! यह देखकर सदा हर्षित रहो। किसी भी कमजोरी से अपनी श्रेष्ठ सेवा से वंचित नहीं होना।

3. कुमारी अर्थात् महान। पवित्र आत्मा को सदा महान आत्मा कहा जाता है। आजकल महात्मायें भी महात्मा कैसे बनते हैं? पवित्र बनते हैं। पवित्रता के कारण ही महान आत्मा कहे जाते हैं। लेकिन आप महान आत्माओं के आगे वह कुछ भी नहीं हैं। आपकी महानता ज्ञान सहित अविनाशी महानता है। वह एक जन्म में महान बनेंगे फिर दूसरे जन्म में फिर से बनना पड़ेगा। आप जन्म-जन्म की महान आत्मायें हो। अभी की महानता से जन्म-जन्म के लिए महान हो जायेंगी। 21 जन्म महान रहेंगी। कुछ भी हो जाए लेकिन बाप के बने तो सदा बाप के ही रहेंगे। ऐसी पक्की हो ना? कच्ची बनेंगी तो माया खा जायेगी। कच्चे को माया खाती, पक्के को नहीं। देखना – यहाँ सभी का फोटो निकल रहा है। पक्की रहना। घबराने वाली नहीं। जितना पक्का उतना खुशी का अनुभव, सर्व प्राप्तियों का अनुभव करेंगे। पक्के नहीं तो सदा की खुशी नहीं। सदा अपने को महान आत्मा समझो। महान आत्मा से कोई ऐसा साधारण कार्य हो नहीं सकता। महान आत्मा कभी किसी के आगे झुक नहीं सकती। तो माया की तरफ कभी झुकने वाली नहीं। कुमारी माना हैन्डस। कुमारियों का शक्ति बनना अर्थात् सेवा में वृद्धि होना। बाप को खुशी है कि यह होवनहार विश्व सेवाधारी विश्व का कल्याण करने वाली विशेष आत्मायें हैं।

4. कुमारियाँ चाहे छोटी हैं, चाहे बड़ी हैं लेकिन सभी सौ ब्राह्मणों से उत्तम कुमारियाँ हैं – ऐसे समझती हो? सौ ब्राह्मणों से उत्तम कन्या क्यों गाया जाता है? हर एक कन्या कम से कम सौ ब्राह्मण तो जरूर तैयार करेगी इसलिए सौ ब्राह्मणों से उत्तम कन्या कहा जाता है। सौ तो कुछ भी नहीं है, आप तो विश्व की सेवा करेंगी। सभी सौ ब्राह्मणों से उत्तम कन्यायें हो। सर्व आत्माओं को श्रेष्ठ बनाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। ऐसा नशा रहता है? कालेज की, स्कूल की कुमारियाँ नहीं। ईश्वरीय विश्व विद्यालय की कुमारियाँ हो। कोई पूछे कौन-सी कुमारियाँ हो? तो बोलो हम ईश्वरीय विश्व विद्यालय की कुमारियाँ हैं। यह एक-एक कुमारियाँ सेवाधारी कुमारियाँ बनेंगी। कितने सेन्टर खुलेंगे। कुमारियों को देख बाप को यही खुशी रहती है कि यह सब इतने हैण्ड तैयार हो रहे हैं। राइट हैण्ड हो ना! लेफ्ट हैण्ड नहीं। लेफ्ट हैण्ड से जो काम करते हैं वह थोड़ा नीचे ऊपर हो सकता है। राइट हैण्ड से काम जल्दी और अच्छा होता है। तो इतनी सब कुमारियाँ तैयार हो जाएं तो कितने सेन्टर खुल जायेंगे, जहाँ भेजें वहाँ जायेंगी ना! जहाँ बिठायेंगे वहाँ बैठेंगी ना! कुमारियाँ सब महान हो। सदा महान रहना। संग में नहीं आना। अगर कोई आपके ऊपर अपना रंग लगाने चाहे तो आप उस पर अपना रंग लगा देना। माँ-बाप भी बन्धन डालने चाहें तो भी बन्धन में बंधने वाली नहीं। सदा निर्बन्धन। सदा भाग्यवान। कुमारी जीवन पूज्य जीवन है। पूज्य कभी पुजारी बन नहीं सकती। सदा इसी नशे में रहने वाली। अच्छा।

5. सभी देवियाँ हो ना! कुमारी अर्थात् देवी। जो उल्टे रास्ते में जाती वह दासी बन जाती और जो महान आत्मा बनती वह देवियाँ हैं! दासी झुकती है। तो आप सब देवियाँ हो, दासी बनने वाली नहीं। देवियाँ का कितना पूजन होता है। तो यह पूजन आपका है ना! छोटी हो या बड़ी सब देवियाँ हो। बस यही सदा याद रखो कि हम महान आत्मायें पवित्र आत्मायें हैं बाप का बनना यह कम बात नहीं है, कहने में सहज बात हो गई है। लेकिन किसके बने हो? कितने ऊंचे बने हो? कितनी विशेष आत्मायें बने हो? यह चलते-फिरते याद रहता है कि हम कितनी महान, कितनी ऊंची आत्मायें हैं। भाग्यवान आत्माओं को सदा अपना भाग्य याद रहे। कौन हो? देवी। देवी सदा मुस्कराती रहती है। देवी कभी रोती नहीं। देवियों के चित्रों के आगे जाओ तो क्या दिखाई देता? सदा मुस्कराती रहती हैं! दृष्टि से, हाथों से सदा देने वाली देवी। देवता या देवी का अर्थ ही है देने वाला। क्या देने वाली हो? सभी को सुख शान्ति आनन्द, प्रेम सर्व खजाने देने वाली देवियाँ हो। सभी राइट हैण्ड हो। राइट हैण्ड अर्थात् श्रेष्ठ कर्म करने वाली।

वरदान:- व्यर्थ संकल्पों के कारण को जानकर उन्हें समाप्त करने वाले समाधान स्वरूप भव

व्यर्थ संकल्प उत्पन्न होने के मुख्य दो कारण हैं - 1- अभिमान और 2- अपमान। मेरे को कम क्यों, मेरा भी ये पद होना चाहिए, मेरे को भी आगे करना चाहिए...तो इसमें या तो अपना अपमान समझते हो या फिर अभिमान में आते हो, नाम में, मान में, शान में, आगे आने में, सेवा में ...अभिमान या अपमान महसूस करना यही व्यर्थ संकल्पों का कारण है, इस कारण को जानकर निवारण करना ही समाधान स्वरूप बनना है।

स्लोगन:- साइलेन्स की शक्ति द्वारा स्वीट होम की यात्रा करना बहुत सहज है।